ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

ताई

कक्षा - आठवीं

विषय – हिंदी
पाठ : २
पाठ का नाम : ताई
PPT-3

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

रामजीदास अपने छोटे भाई और उनकी संतान पर बड़ा स्नेह रखते हैं–ऐसा स्नेह कि अपनी संतानहीनता कभी खटकती ही नहीं। छोटे भाई की संतान को वे अपनी ही संतान समझते हैं। दोनों बच्चे भी रामजीदास को अपने पिता से भी अधिक समझते हैं, परंतु रामजीदास की पत्नी रामेश्वरी को अपनी संतानहीनता का बड़ा दुख है। वे दिन-रात अपनी संतान की सोच में ही घुला करतीं! पति को अपने भाई के बच्चों से प्रेम करते देख उनका दुख और भी बढ़ जाता।

वे जब-तब अपने पति से कहतीं, "हमारे बाद हमारे वंश का नाम कैसे चलेगा?" बाबू साहब हँसकर कहते, "अरे! तुम भी कहाँ की बातें ले आईं। नाम संतान से नहीं चलता। नाम अपनी सुकृति से चलता है। तुलसीदास को देश का बच्चा-बच्चा जानता है। सूरदास को क्या हम भुला पाए हैं! और तो और नि:संतान गिरधारीलाल द्वारा बनवाई गई धर्मशाला और अनाथालय से उनका नाम अब तक चला आ रहा है।"

रामेश्वरी न कहा, "शास्त्र में लिखा है कि जिसके पुत्र नहीं होता, उसकी मुक्ति नहीं होती।"

बाबू साहब बोले, "तो क्या सभी पुत्रवानों को मुक्ति मिल जाती है? कैसी बातें करती हो!" पति के तर्कों के सामने रामेश्वरी निरुत्तर हो जातीं।

3

रामेश्वरी को माता बनने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था किंतु उनके हृदय में वे सभी गुण विद्यमान थे, जो एक माता के हृदय में होते हैं। उनका हृदय उन बच्चों की ओर खिंचता तो था परंतु जब उन्हें ध्यान आता था कि ये बच्चे मेरे नहीं, दूसरे के हैं, तब उनके प्रति न जाने क्यों द्वेष उत्पन्न हो जाता था। विशेषकर उस समय उनके द्वेष की मात्रा और भी बढ़ जाती थी, जब वे देखती थीं कि उनके पतिदेव उन बच्चों पर प्राण देते हैं।

शाम का समय था। रामेश्वरी खुली छत पर बैठी हवा खा रही थीं। पास ही उनकी देवरानी बैठी थी। दोनों बच्चे छत पर दौड़-दौड़कर खेल रहे थे। रामेश्वरी उनका खेल देख रही थी। इस समय रामेश्वरी को उन बच्चों का खेलना-कूदना भला मालूम हो रहा था। वायु में उड़ते हुए उनके बाल, कमल की तरह खिले हुए उनके नन्हे-नन्हे मुख, उनकी प्यारी-प्यारी तोतली बातें, उनका चिल्लाना, भागना इत्यादि क्रीड़ाएँ उनके हृदय को शीतल कर रही थीं। सहसा मनोहर अपनी बहन को मारने दौड़ा। वह खिलखिलाती हुई रामेश्वरी की गोद में जा गिरी। उसके पीछे-पीछे मनोहर भी दौड़ता हुआ आया और वह भी उन्हीं की गोद में जा गिरा। रामेश्वरी उस समय सारा द्वेष भूल गईं। उन्होंने दोनों बच्चों को हृदय से लगा लिया और जी भरकर दोनों को प्यार किया। उस समय यदि कोई अपरिचित मनुष्य उन्हें देखता तो उसे यही विश्वास होता कि रामेश्वरी ही उन बच्चों की माँ हैं।

(४)

शब्दार्थ

सुकृत = अच्छे कार्य ।

तर्क = जानने - समझाने हेतु किया जाने वाला यत्न ।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

दोनों बच्चे बड़ी देर तक उनकी गोद में खेलते रहे। सहसा उसी समय किसी के आने की आहट पाकर बच्चों की माता वहाँ से उठकर चली गई।

"मनोहर, ले रेलगाड़ी," कहते हुए बाबू रामजीदास छत पर आए। उनका स्वर सुनते ही दोनों बच्चे रामेश्वरी की गोद से तड़पकर निकल भागे। रामजीदास ने पहले दोनों को खूब प्यार किया, फिर बैठकर रेलगाड़ी दिखाने लगे। इधर रामेश्वरी की नींद टूटी। पति को बच्चों में मगन देखकर उनकी भौंहें तन गईं। बच्चों के प्रति हृदय में फिर वही द्वेष का भाव जाग उठा।

बच्चों को रेलगाड़ी देकर बाबू साहब रामेश्वरी के पास आए और मुसकराकर बोले, "आज तो तुम बच्चों को बड़ा प्यार कर रही थीं। इससे मालूम होता है कि तुम्हारे हृदय में भी इनके प्रति कुछ प्रेम अवश्य है!"

रामेश्वरी को पति की यह बात बहुत बुरी लगी और अपनी कमज़ोरी पर बड़ा दुख हुआ। रामजीदास बोले, "इसीलिए मैं कहता हूँ कि अपनी संतान के लिए सोच करना वृथा है। यदि तुम इनसे प्रेम करने लगो तो तुम्हें ये ही अपनी संतान प्रतीत होने लगेंगे। मुझे इस बात से प्रसन्नता है कि तुम इनसे स्नेह करना सीख रही हो।" यह बात बाबू साहब ने नितांत शुद्ध हृदय से कही थी परंतु रामेश्वरी को इसमें व्यंग्य की तीक्ष्ण गंध मालूम हुई।

बाबू साहब ने पत्नी को मौन देखकर कहा, "अब झेंपने से क्या लाभ? अपने प्रेम को छिपाने की चेष्टा करना व्यर्थ है; छिपाने की आवश्यकता ही नहीं!"

रामेश्वरी जल-भुनकर बोलीं, "मुझे क्या पड़ी है जो मैं प्रेम करूँगी। निगोड़े आप ही आ-आकर घुसते हैं। एक घर में रहने से कभी-कभी हँसना-बोलना पड़ता ही है। अभी परसों ज़रा यों ही धकेल दिया, उस पर तुमने सैकड़ों बातें सुनाईं। संकट में प्राण हैं, न यों चैन, न यों चैन!"

बाबू साहब को पत्नी के वाक्य सुनकर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने कर्कश स्वर में कहा, "न जाने कैसे हृदय की स्त्री है। अभी अच्छी-खासी बैठी बच्चों को प्यार कर रही थी, मेरे आते ही गिरगिट की तरह रंग बदलने लगी। न जाने मेरी बातों में कौन-सा विष घुला रहता है! यदि मेरा कहना ही बुरा मालूम होता है तो नहीं कहूँगा लेकिन इतना याद रखो कि अब जो कभी इनके विषय में अपशब्द निकाले तो अच्छा न होगा।"

रामेश्वरी ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। प्रायः बच्चों के पीछे पति-पत्नी में कहा-सुनी हो जाती थी और रामेश्वरी को पति के कटु वचन सुनने पड़ते थे।

एक दिन रामेश्वरी छत पर टहल रही थीं कि मनोहर दौड़ता हुआ आया। संध्या का समय था। आकाश रंग-बिरंगी पतंगों से भरा था। यदि ये पतंगें कट-कटकर उसकी छत पर गिरें तो कितना

(५)

शब्दार्थ

द्वेष = शत्रुता , वैर ।

अपरिचित = अज्ञात ।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

आनंद आएगा! देर तक पतंग गिरने की प्रतीक्षा करने के बाद वह दौड़कर रामेश्वरी के पास आया और उनकी टाँगों से लिपटकर बोला, "ताई, हमें पतंग मँगा दो!"

रामेश्वरी ने झिड़ककर कहा, "चल हट, अपने ताऊ से जाकर माँग!"

मनोहर कुछ अप्रतिभ-सा होकर फिर आकाश की ओर ताकने लगा। अब उससे रहा न गया। इस बार उसने बड़े लाड़ में आकर अत्यंत करुण स्वर में कहा, "ताई, पतंग मँगा दो; हम भी उड़ाएँगे!"

इस बार उसकी भोली प्रार्थना से रामेश्वरी का कलेजा कुछ पसीज गया। वे कुछ देर तक उसकी ओर स्थिर दृष्टि से देखती रहीं। फिर उन्होंने एक लंबी साँस लेकर मन-ही-मन में कहा—यदि यह मेरा पुत्र होता तो मुझसे बढ़कर भाग्यवान स्त्री संसार में दूसरी न होती! निगोड़ा इतना सुंदर है और कैसी प्यारी-प्यारी बातें करता है! जी चाहता है कि उठाकर छाती से लगा लूँ!

यह सोचकर वे उसके सिर पर हाथ फेरने ही वाली थीं कि इतने में मनोहर उन्हें मौन देखकर बोला, "तुम हमें पतंग नहीं मँगवा दोगी तो ताऊ जी से तुम्हारी शिकायत करेंगे!"

यद्यपि बच्चे की इस भोली बात में भी बड़ी मधुरता थी तथापि रामेश्वरी का मुख क्रोध के मारे लाल हो गया। वे झिड़ककर बोलीं, "जा, कह दे अपने ताऊ जी से! देखूँ, वे मेरा क्या करेंगे!"

मनोहर भयभीत होकर उनके पास से हट गया और फिर सतृष्ण नेत्रों से आकाश में उड़ती हुई पतंगों को देखने लगा।

इधर रामेश्वरी ने सोचा—यह सब ताऊ के दुलार का ही फल है कि यह छोटा-सा लड़का मुझे धमकाता है।

उसी समय आकाश से एक पतंग कटकर उसी छत की ओर आई और रामेश्वरी के ऊपर से होती हुई छज्जे की ओर गई। पतंग छज्जे पर से होती हुई नीचे, घर के आँगन में जा गिरी। एक पैर छज्जे की मुँडेर पर

(६)

शब्दार्थ

वृथा =बेकार ,व्यर्थ ।

झेंपना = लजाना, शर्मिंदा होना

निगोड़ा = अभागा, दुष्ट ।

कर्कश = कठोर , निर्दय ।

जारी रहेगा...

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

संबंधित प्रश्न –

१. मनोहर के पिता और रामजीदास के छोटे भाई का नाम क्या है?

२. कृष्णदास की कितनी संतान थी ? नाम बताइए।

३. मनोहर और उसकी बहन चुन्नी की उम्र कितनी थी ?

४. रामेश्वरी को किस बात का दुःख था?

५. वंश का नाम वंश से चलता है या सुकृति से ? अपने विचार व्यक्त कीजिए

६. रामेश्वरी का द्वेष किस समय अधिक बढ जाता था

७. ७. 'गिरगिट की तरह रंग बदलना' का अर्थ क्या है?

८. मनोहर की किस प्रार्थना से रामेश्वरी का कलेजा पसीज गया ?

९. अर्थ बताओ - अप्रतिभ= ---------- सतृष्ण = ----------

१०. आकाश से पतंग कटकर छज्जे पर से होती हुई कहाँ गिरी?

गृहकार्य - उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर H/W की कॉपी में लिखना।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow